विलफ्रेडो परेटो: तार्किक व अतार्किक क्रिया

(Vilfredo Pareto: Logical and Non–Logical Action)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

विलफ्रेडो परेटो (1848–1923): व्यक्तित्व एवं कृतित्व

- **जन्म:** 15 जुलाई, 1848 पेरिस, फ्रांस
- पिता इटालियन तथा माता फ्रांसीसी
- सिविल इंजीनियरिंग की शिक्षा तथा रेल में इंजीनियर के तौर पर नौकरी
- पिता के ही समान लोकतांत्रिक एवं शांतिवादी विचारधारा का समर्थक
- कुछ समय के पश्चात उक्त विचारों की नापसंदगी
- सरकार की आलोचना तथा विरोधी उम्मीदवार के रूप में चुनाव में शामिल
- चुनावी हार के बाद राज्य व प्रशासन के प्रति कटुता का भाव

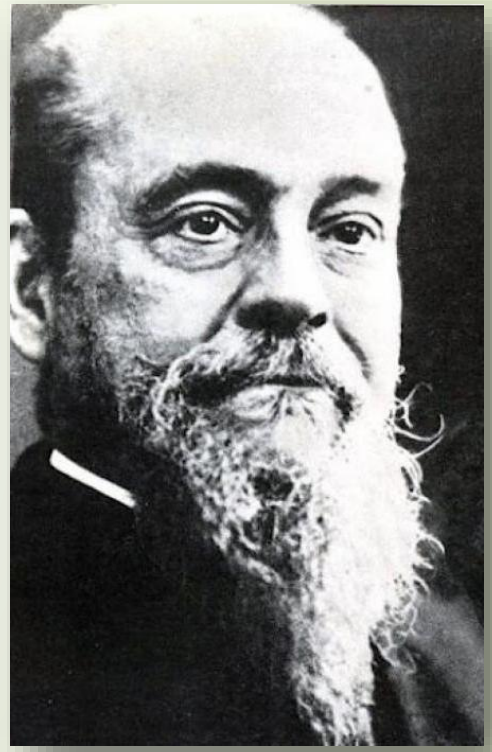

प्रमुख कृतियाँ

- *Manual of Political Economy*, 1906
- *The Treatise on General Sociology*, 1915
- *Mind and Society*, 1936 (4 Vol.)
- *Sociological Writings*, 1966
- *The Other Pareto*, 1980

विलफ्रेडो परेटो: बौद्धिक परिवेश

- 1876 में इटली में दक्षिणपंथी शासन का पतन, परिणामस्वरूप प्रशासन के प्रति नापसंदगी
- मानवतावादी व लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति अस्वीकृति
- मेकियावेली, मोस्का, डार्विन से प्रभावित
- फासीवादी विचारधारा का प्रभाव

परेटो का वैचारिक परिप्रेक्ष्य

- समाजशास्त्र को भौतिक तथा रसायनशास्त्र ले स्तर तक पहुंचाने की इच्छा
- समाजशास्त्र के साथ अर्थशास्त्र में रुचि
- वे समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र को एक प्रयोगात्मक–तार्किक स्तर प्रदान कराना चाहते थे।

विलफ्रेडो परेटो का सैद्धांतिक परिचय

- समाजशास्त्र अतार्किक क्रियाओं का अध्ययन है।
- समाजशास्त्र अतार्किक क्रियाओं का अध्ययन तार्किक रूप से करता है।
- मानव के व्यवहार को समझने के लिए दो मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं (विशिष्ट चालक तथा भ्रांत तर्क) का प्रतिपादन किए, वे इन्हें अध्ययन विधि (तार्किक–प्रयोगिक: Logico–experimental) कहते हैं।
- तार्किक–प्रयोगिक विधि: वस्तुनिष्ठ तथा व्यक्तिनिष्ठ दोनों का समन्वय
- सामाजिक परिवर्तन का चक्रीय सिद्धांत
- मेकियावेली के शब्दों में, *'परेटो बुर्जुआ कार्ल मार्क्स थे।'*

तार्किक व अतार्किक क्रिया

Mind and Society, 1936

मानवीय क्रियाओं का वर्गीकरण

- तार्किक/ तर्कसंगत क्रिया
- अतार्किक/ अतर्कसंगत क्रिया

परेटो बताते हैं कि प्रत्येक सामाजिक घटना के दो पहलू हो सकते हैं –

- जैसी घटना वास्तव/ यथार्थ में हो।
- जैसी घटना किसी शक्ति विशेष के मस्तिष्क में अंकित है। (वस्तुनिष्ठ व व्यक्तिनिष्ठ)

तार्किक व अतार्किक क्रिया

तार्किक क्रिया

- जब कोई क्रिया कर्ता तथा दूसरे व्यक्तियों के दृष्टिकोण से यथार्थ होती है।
- वे क्रियाएँ जो साध्य को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त साधनों को काम में लाती हैं। ये क्रियाएँ साधन तथा साध्य को तार्किक रूप से जोड़ती है।
- यह कार्य–कारण से संबंधित होती है।
- तार्किक क्रिया = व्यक्तिनिष्ठ + वस्तुनिष्ठ

अतार्किक क्रिया

- जब कोई क्रिया भ्रांत तर्कों, भावनाओं अथवा संवेगों पर आधारित होती है।
- वे सभी क्रियाएँ जो तार्किक नहीं हैं।

तार्किक व अतार्किक क्रिया

- व्यक्तिगत क्रिया के दो पक्ष: लक्ष्य तथा साधन
- लक्ष्य तथा साधनों के मध्य स्पष्ट तर्क संगति – **तार्किक क्रिया**
- लक्ष्य तथा साधनों के मध्य स्पष्ट तर्क संगति नहीं – **अतार्किक क्रिया**

- अतार्किक क्रियाएँ वे क्रियाएँ होती हैं जिनके लक्ष्य तथा साधनों को कर्ता अनेक ऐसे तर्कों पर स्पष्ट कर देता है जो केवल उसी के दृष्टिकोण से उचित होते हैं। इन तर्कों को 'भ्रांत तर्क' कहा जाता है।

अतार्किक क्रिया

- समाजशास्त्र एक ऐसा समाज विज्ञान है, जो मनुष्य की अतार्किक अंतःक्रिया का अध्ययन करता है।
- तार्किक अंतःक्रियाओं का अध्ययन अर्थशास्त्र करता है तथा अतार्किक क्रिया समाजशास्त्र की विषय–वस्तु है।
- आगमनात्मक (Inductive) नियमों द्वारा अतार्किक क्रिया की व्याख्या
- अतार्किक क्रिया = मानसिक अवस्था + क्रियाकलाप + संवेग व मनोभावों की अभिव्यक्ति
- अतार्किक क्रियाओं का संबंध दो तत्वों (अवशिष्ट व भ्रांत तर्क) से होता है।

अवशिष्ट तथा भ्रांत तर्क

- दोनों ही अतार्किक क्रियाओं की व्याख्या से संबंधित हैं।
- अवशिष्ट विभिन्न प्रेरणाओं के रूप में अतार्किक क्रियाओं के स्थिर पक्ष को स्पष्ट करते हैं तथा भ्रांत तर्क सैद्धांतिकरण के रूप में इन क्रियाओं के औचित्य को प्रदर्शित करने वाला गतिशील पक्ष है।

अवशिष्ट

- मनुष्य की संपूर्ण क्रियाएँ तार्किक नहीं होती। संपूर्ण क्रियाओं में से तार्किक क्रिया को निकाल देने पर जो बचेगा, वह अवशिष्ट है।
- मनुष्य के विश्वास, परंपराएँ, रीति–रिवाज, संस्कृति आदि अवशिष्ट है।
- **अवशिष्ट क्रिया की 6 श्रेणियाँ**

  - सम्मिलन (Combination)
  - स्थायित्व (Persistence)
  - अभिव्यक्ति (Manifestation)
  - सामाजिकता (Sociability)
  - व्यक्तित्व का संगठन (Integrity of Personality)
  - यौन (Sex)

भ्रांत तर्क

- मनुष्य जैसा भी भावनात्मक अथवा संवेगात्मक व्यवहार करता है, वह उसे भ्रांत तर्कों की सहायता से सही सिद्ध करता है।
- भ्रांत तर्क के 4 वर्ग
  - दृढ़कथन (Assertions)
  - प्राधिकार (Authority)
  - मनोभावों की अनुरूपता (Accord with Sentiments)
  - मौखिक प्रमाण (Verbal Proof)
- मनुष्य अपनी अधिकांश क्रियाएँ अनुभूति, भावना तथा संवेगों के आधार पर करता है। इसके पश्चात भी वह अपनी क्रियाओं की व्याख्या इस प्रकार करता है जिससे कि वे उचित तथा तार्किक प्रतीत हो सके।

Next Class:

विलफ्रेडो परेटो: अभिजनों का परिभ्रमण

(Vilfredo Pareto: Circulation of Elites)